

भू-जल संग्रह दोहावली

जल संग्रहण वर्तमान समय की सबसे बड़ी मांग है। जल की प्रत्येक बूंद का संग्रहण आवश्यक ही नहीं बल्कि एक अनिवार्यता होती जा रही है। जल संग्रहण का यह प्रयास समाज के प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा किया जाना चाहिये। जल संग्रहण हेतु समाज को जागृत करने की तथा उन्हें इसके विभिन्न उपायों को समझाने की परम आवश्यकता है। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति जल संग्रहण के विभिन्न तकनीकी तरीकों से अवगत रहेगा तो वह उन्हें आसानी से अपना सकेगा और समाज के हित में तथा स्वयं के लिये भी जल संग्रहण के इस यज्ञ में अपना योगदान दे सकेगा।

इस समाची न विषय को रचनात्मकता में पिरोने के दृष्टिकोण से जल संग्रहण एवं संवर्धन के सभी तकनीकी तरीकों को दौहों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है और भू जल संग्रह दोहावली का नाम दिया गया है। इस दोहावली के माध्यम से कृषक अपने खेत और गांवों में वर्षा के जल का अधिक से अधिक संग्रह कर सकते हैं।

इस पृथ्वी को हमारे पूर्वजों ने माता का संबोधन दिया गया है और हम सभी आज भी इस धरती को मां कह कर पुकारते भी हैं लेकिन शायद केवल पुकारते हैं उसे मां मानते नहीं हैं। यदि हम इस धरती को वास्तव में मां मानने लगे और इसकी स्वास्थ्य रक्षा भी ठीक उसी प्रकार करने लगे जिस प्रकार हम अपनी मां की अर्थात् एक मानव शरीर की स्वास्थ्य रक्षा करते हैं तो शायद इस धरती पर जल का संकट स्वयं ही समाप्त हो जायेगा। मानव शरीर को स्वस्थ रखने हेतु जो संभावित प्रयास होते हैं उन्ही प्रयासों के तार्किक चिंतन से हम इस धरती मां पर आने वाले जल संकट को समाप्त कर सकते हैं। बस आवश्यकता है उनके तार्किक चिंतन की और थोड़े से प्रयासों की।

इसी समरूपता के आधार पर पृथ्वी को मानव शरीर मानकर, विभिन्न स्वास्थ्य रक्षा के सूत्रों को, भू-जल बढ़ाने के उपायों में विकसित किया गया है। समरूपताये अत्यंत सहज हैं। पृथ्वी की उपरी सतह जैसे हमारे शरीर की उपरी त्वचा, मिट्टी जैसे शरीर का मांस, कुंये जैसे मुंह, नलकूप जैसे नाक और भू जल भंडार जैसे खून की नसें, इत्यादि की समरूप विचारधारा के आधार पर विभिन्न उपायों को विकसित कर दौहों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

जिस प्रकार अपनी माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखने का तात्पर्य है कि उनकी जीवनी शक्ति को बढ़ाना उसी प्रकार धरती मां के स्वास्थ्य का ध्यान रखने का तात्पर्य है धरती पर अधिक से अधिक जीवनी शक्ति यानी जल का संग्रहण करना और यह कार्य इस सृष्टि के अस्तित्व को जीवित रखने की दिशा में एक महान कार्य है। प्रत्येक प्राणी को इस पुनीत कार्य को अवश्य करना चाहिये। प्रस्तुत दोहावली इस जल संकट को एक नये दृष्टिकोण से हल करने में सहायक होगी।

एक अंश.....

वर्षा जल का भूमि पर, होय रिसन गर बंद ।
समझो जैसे मात का, हुआ हाजमा मंद ॥
पाचक गोली दीजिये, बंद जायेगी भूख ।
धरती पर जल धार भी, जाये जल्दी सूख ॥

- अवधेश कुमार नेमा

भू-जल संग्रह दोहावली

रचयिता : अवधेश कुमार नेमा

जल का महत्व

धरती माँ की कोख में, जल के हैं भंडार ।
बूंद-बूंद को तड़प रहे, फिर भी हम लाचार ॥

हमारी धरती मां के गर्भ में जल का विशाल भंडार होने के बावजूद भी भी हम कहीं कहीं और कभी कभी जल की एक एक बूंद को तरसते रह जाते हैं । जबकि इस विशाल भंडार की क्षमता इतनी होती है कि यदि इसे संभाल कर उपयोग किया जाये तो जल का संकट कभी भी नहीं आ सकता ।

दोहन करने के लिये, लगा दिया सब ज्ञान ।
पुनर्भरण से हट गया, हम लोगों का ध्यान ॥

किंतु वर्तमान परिवेश में इस प्रकार जल की बूंद बूंद के लिये तरसने का मुख्य कारण यह है कि हमने अपने सारे ज्ञान का उपयोग इस जल भंडार के दोहन में ही लगा दिया है और इसके पुनर्भरण की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया है ।

गहरे से गहरे किये, हमने अपने कूप ।
रही कसर पूरी करी, लगा लगा नलकूप ॥

हमने इस जल भंडार का अधिक से अधिक दोहन करने के लिय अपने कुओं को गहरे से गहरा किया इसके बावजूद भी जो कसर बाकी रह गई थी उसे हमने नलकूप लगा लगा कर पूरी कर ली । नित नये नलकूपों के खनन से भू जल भंडार का लगातार दोहन ही हो रहा है ।

जल तो जीवन के लिये, होता है अनमोल ।
पर वर्षा के रूप में, मिलता है बेमोल ॥

यह जल हमारे जीवन के लिये एक अनमोल रत्न है इसके अभाव में जीवन अकल्पनीय है और प्रकृति का वरदान तो देखिये कि यह जल हमें वर्षा के रूप में बेमोल अर्थात् मुफ्त ही मिलता है ।

अगर संजोते हम इसे, देकर पूरा ध्यान ।
सूखा बाद न झेलते, रहता सुखी जहान ॥

यदि हम वर्षा के इस जल को पूरा ध्यान देकर संजोते अर्थात् एकत्रित कर के रखते तो हमें सूखा और बाद जैसी समस्याओं का कभी सामना नहीं करना पड़ता और हमारा जीवन तथा यह संसार सदैव सुखी रहता ।

जन सहभागिता ही मूल मंत्र :

आओ मिल-जुल रोक लें, हम वर्षा की धार ।
कूप और नलकूप फिर, कभी न हो बेकार ॥

आइये, हम सभी आपस में मिलकर इस वर्षा के बहते हुये जल को रोकने का प्रयास करें । ऐसा करने से हमारे कुयें और नलकूप सदैव जीवित रहेंगे और उनमें सदैव जल रहेगा तथा वे कभी बेकार नहीं हो पायेंगे ।

**बूंद-बूंद जल रोकिये, भरिये जल भंडार ।
पुनर्भरण से कीजिए, अब अपना उद्धार ॥**

अतः वर्षा की एक एक बूंद को रोक कर धरती मां के गर्भ में संचित कर भू जल भंडार का पुनर्भरण अर्थात् रीचार्जिंग करें और अपने जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास करें । वर्तमान परिवेश में जल की एक एक बूंद को रोकना बड़े ही पुण्य का कार्य होगा ।

मूल सिंद्धांत एवं उपाय

**पुनर्भरण में राखिये, तीन बात का ध्यान ।
आवक, संग्रह और रिसन, सफल करें अभियान ॥**

जल के इस पुनर्भरण अथवा रीचार्जिंग की प्रक्रिया में हमें मुख्य रूप से तीन बातों का ध्यान रखना होगा । पहली है, आवक अर्थात् जिस स्थान पर हम जल का पुनर्भरण अथवा रीचार्ज करना चाहते हैं वहां पर किसी न किसी स्थान से जल बहकर आता हो, दूसरा यह कि उस स्थान पर जल को संग्रह करने का पर्याप्त स्थान हो तथा तीसरा यह कि उस स्थान से जमीन के अंदर जल का रिसन होने की पर्याप्त संभावना हो यानी जल जमीन के अंदर आसानी से जा सके ।

**काया में जल की कमी, बढ़ा देय ज्यों ताप ।
वैसी ही यह भूमि भी, तपन झेलती आज ॥**

जिस प्रकार मानव के शरीर में जल की कमी हो जाने पर उसे तेज बुखार आ जाता है ठीक उसी प्रकार इस जमीन पर जल की कमी हो जाने के कारण इसे अत्यंत तेज बुखार आ चुका है और इसका स्वास्थ्य दिनों दिन खराब होता जा रहा है ।

हम चूंकि धरती को माता मानते हैं अतः यदि इसके स्वास्थ्य का ध्यान भी हम वैसे ही रखें जिस प्रकार हम अपनी माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हैं तो समस्या शीघ्र हल हो सकती है । आइये इस प्रक्रिया को हम मानव की चिकित्सा के आधार पर ही समझें ।

**इक रोगी को चाहिये, जैसे भी उपचार ।
वैसा ही अब कीजिये, जमीं संग व्यवहार ॥**

जिस प्रकार के उपचार हम एक रोगी के साथ करते हैं ठीक उसी प्रकार के उपायों की आवश्यकता आज इस जमीन को है । हम वे सभी उपाय जो एक मनुष्य के शरीर को स्वस्थ रखने के लिये करते हैं वैसे ही मिलते जुलते सभी उपायों की आज इस जमीन को आवश्यकता है ।

**विद्या है बिल्कुल सरल, भाषा भी है आम ।
जन-जन के मन में बसी, रोगी वैद्य जुबान ॥**

इस प्रकार की भाषा शैली सभी के लिये चिर परिचित है क्योंकि सभी व्यक्ति कभी न कभी स्वयं अथवा अपने परिचितों के संबंध में वैद्य अथवा डाक्टरों के यहां अवश्य ही जाते हैं और गोली, इंजेक्शन, ब्लूकोस बाटल इत्यादि उपचारों तथा इनकी क्रिया विधि से परिचित हो जाते हैं ।

नियमित खेती एवं जैविक खाद (अर्थात् नियमित दिनचर्या एवं संतुलित भोजन)

**ज्यों काया चंगी रखें, भोजन और अभ्यास ।
वैसे ही इस भूमि पर, कीजै कष्टक प्रयास ॥**

जिस प्रकार हमारे शरीर को स्वस्थ रखने का सर्वप्रथम उपाय यह होता है कि हमारी दिनचर्या नियमित हो अर्थात् हम स्वस्थ रहने के लिये कुछ नियमित व्यायाम करें तथा संतुलित भोजन लें इसी प्रकार हमें धरती माता के लिये भी कुछ व्यायामों एवं संतुलित भोजन का प्रयोग करना चाहिये ।

**कृषि योग्य सब भूमि पर, लीजै फसल उगाय ।
कीजै ढाल विरुद्ध यह, रोके जल अधिकाय ॥**

समस्त कृषि योग्य भूमि पर हमें फसलों का उत्पादन लेना चाहिये और यदि हम इन फसलों की बोनी ढाल के विरुद्ध करें तो खेतों में बरसात के समय बहने वाला जल रुक-रुक कर बहता है और खेतों में अधिक समय तक रुकता है ।

**धरती माता के लिये, यह उत्तम अभ्यास ।
भूमि सतह रहती नरम, बदै रिसन की आस ॥**

इस प्रकार की और भी उन्नत कृषि तकनीक उपलब्ध है जिनसे भूमि की संरचना सुदृढ़ बनाये रखी जा सकती है । किंतु धरती माता के लिये इस अभ्यास अर्थात् कंटूर पर खेती को सर्वोत्तम माना जाता है, ऐसा करने से भूमि की सतह अधिक समय तक नरम रहती है और अधिक से अधिक जल जमीन के अंदर रिसने की संभावना रहती है ।

**स्वस्थ रहे यह भूमि भी, रखिये इसका ध्यान ।
होती जैविक खाद से, यह अच्छी बलवान ॥**

हमें अपनी मां की तरह इस धरती के स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना चाहिये इसे स्वस्थ बनाये रखने के लिये इसमें जैविक खादों का प्रयोग करना चाहिये । जैविक खादों के प्रयोग से यह अच्छी बलवान अर्थात् उपजाऊ हो जाती है ।

**ज्यों काया को दूध फल, दें ताकत और स्वाद ।
वैसी ही इस भूमि को, देती जैविक खाद ॥**

जिस प्रकार मानव शरीर को दूध एवं फलों से ताकत एवं स्वाद दोनों मिलते हैं ठीक उसी प्रकार जैविक खादों से भी इस धरती को उपजाऊपन एवं अधिक जल संधारण की क्षमता दोनों ही प्राप्त हो जाते हैं

उदर शुद्धीकरण (अर्थात् नदी नालों की सफाई)

**गर कचरा हो पेट में, भोजन नहीं सुहाय ।
तब जुलाब देकर इसे, सुंदर स्वच्छ बनाय ॥**

जिस प्रकार कभी-कभी हमारे पेट में कचरा एकत्रित हो जाने पर हमें भोजन अच्छा नहीं लगता और हमारी भूख कम हो जाती है, तब हम जुलाब अथवा किसी विरेचक चूर्ण को खाकर अपने पेट को साफ करते हैं । पेट के साफ हो जाने पर हमारी भूख खुल जाती है, तथा भोजन अच्छा लगने लगता है ।

**इसी भांति जब भूमि में, बाढ़ें जल से पीर ।
नदि,नाले,तालाब सब, करें साफ हित नीर ॥**

ठीक इसी प्रकार जब नदी, नालों एवं तालाबों में जल ठहरने अथवा एकत्रित करने की क्षमता घट जाती है और वर्षा का जल इनमें न समाकर आस-पास बह कर बाढ़ का रूप लेने लगता है तब इनका गहरीकरण करना आवश्यक हो जाता है, ऐसी स्थिति में गहरीकरण कर, वहां एकत्रित कचरे मिट्टी एवं साढ़ को हटा कर इन संरचनाओं की जल संग्रहण क्षमता को बढ़ाया जाता है ।

मालिश : (अर्थात् गहरी जुताई)

**दर्द घटाने के लिये, मालिश एक उपाय ।
करें मुलायम यह त्वचा, रोम रोम खुल जाय ॥**

स्वास्थ्य बिगड़ने का प्रारंभ दर्द से होता है जब यह दर्द प्रारंभिक अवस्था में होता तो इसे मालिश के माध्यम से भी दूर किया जा सकता है । शरीर के जिस हिस्से पर मालिश की जाती है वहां पर त्वचा के रोम खुल जाते हैं और हवा का संचरण आसानी से होने लगता है तथा वहां की त्वचा मुलायम हो जाती है और हम आराम महसूस करते हैं ।

**इसी भांति गर भूमि को, जोतें गहरा खूब ।
होगी पोली भुर-भुरी, बाढ़ें जल की भूख ॥**

ठीक इसी प्रकार जिस भूमि पर जल का रिसाव नहीं हो पाता है उस स्थान पर यदि हम गहरी जुताई करें तो वह भूमि पोली और भुरभुरी हो जाती है अर्थात् खाली स्थान अधिक बढ़ जाता है, जिसके कारण उस स्थान में अधिक जल ठहरने अथवा एकत्रित होने की क्षमता अथवा दूसरे शब्दों में कहें कि धरती मां की भूख जल के लिये अधिक बढ़ जाती है ।

**जहां-जहां जिस भूमि पर, हो संभव यह काम ।
नेक जतन करवाइये, हो जल का आराम ॥**

इसलिये जहां-जहां और जिस-जिस भूमि पर यह कार्य संभव हो वहां इसे अच्छी तरह करवाना चाहिये ताकि उस स्थान पर जल का अधिक से अधिक रिसाव सुनिश्चित किया जा सके और जल की उपलब्धता आसान हो सके । जुताई की गहराई लगभग डेढ़ से दू फुट रखना पर्याप्त होता है ।

**या खेती का क्षेत्र हो, या हो पड़त जमीन ।
सभी जगह बजवाये यह, जल की सुंदर बिन ॥**

चाहे वह खेती का क्षेत्र हो अथवा कोई पड़त जमीन ही क्यों न हो इस प्रकार की गहरी जुताई कर देने से जल का रिसाव निश्चित रूप से बढ़ जाता है । जहां बड़े क्षेत्रों में पूरे क्षेत्र में इस प्रकार की गहरी जुताई संभव न हो वहां पर ढाल के विरुद्ध दिशा में उचित दूरी पर लगभग तीन से चार मीटर चौड़ी पट्टियों में इस प्रकार की जुताई करा देनी चाहिये ।

ठंडे पानी की पट्टी (अर्थात् पलवार प्रयोग)

**कभी-कभी ज्वर के लिये, बिना सर्च बिन दाम ।
ठंडे जल में डोब कर, पट्टी करती काम ॥**

शरीर में दर्द अधिक बढ़ जाने के बाद कभी कभी बुखार आ जाता है इसके लिये बड़ा ही सस्ता और सरल उपाय होता है जिसमें एक कपड़े की पट्टी को ठंडे जल में डुबा कर माथे या शरीर पर रख दिया जाता है और इससे बुखार में आराम हो जाता है। इस उपाय से लाभ होने के पीछे जो मुख्य कारण है वह यह है कि हम जिस कपड़े की पट्टी को हम गीला करके रखते हैं, उस कपड़े में रंध अधिक होते हैं और उन रंधों में जल अधिक समय तक रुक जाता है जो लगातार शरीर के संपर्क में रहता है, जिससे शरीर का तापक्रम कम होने लगता है।

**इसी भांति जब खेत में, बिछ जाये पलवार।
वर्षा जल ज्यादा थमे, रिसे अनेकों बार॥**

ठीक इसी प्रकार की पट्टी हम खेतों में भी बिछा सकते हैं इसे पलवार के नाम से जाना जाता है। इसके लिये खेतों से निकला कचरा, हरी या सूखी पत्तिया आदि फसलों की कतारों के बीच में बिछा दी जाती है। उस पलवार में रंध अधिक होने के कारण वर्षा का जल अधिक समय तक रुकता है और अधिक समय तक रुकने के कारण जमीन में अधिक समय तक रिसता रहता है।

**घास फूस या पत्तियां, जो होवें बेकार।
जगह जगह बिछवाइये, नमी करें साकार॥**

इस प्रकार का घास फूस अथवा बेकार पत्तियों को अन्य आवश्यक स्थानों पर भी जमाया जा सकता है। यह कचरा आदि इस प्रकार का होना चाहिये जिसमें जल समाने की क्षमता हो। इस उपाय से पौधों की जल की आवश्यकता तो कम होती ही है साथ ही जमीन में नमी बनी रहती है और जमीन में जल का रिसाव सामान्य की अपेक्षा अधिक होता है।

**पौधों की जड़ के तले, रखें कुछ पलवार।
जल की होवे आपत कम, उड़े नहीं बेकार॥**

घरों में भी गमलों अथवा बड़े वृक्षों की जड़ के पास भी इस प्रकार की पलवार का प्रयोग किया जा सकता है। ऐसा करने से जल व्यर्थ ही नहीं उड़ता तथा उसकी आपत कम हो जाती है अर्थात् पौधों या वृक्षों की बढ़त के लिये सामान्य की अपेक्षा कम जल देना पड़ता है।

पाचक गोलियां : (अर्थात् सौख्ता गड्ढे)

**वर्षा जल का भूमि पर, होय रिसन गर बंद।
समझो जैसे मात का, हुआ हाजमा मंद॥**

जब जमीन के ऊपर वर्षा के जल का रिसन बंद हो जाये तो समझना चाहिये कि हमारी धरती माता का हाजमा मंद हो चुका है, तभी तो इस पर आने वाला जल अंदर नहीं रिस पा रहा है, जैसे हमारे शरीर का हाजमा अर्थात् पाचन शक्ति बिगड़ जाने पर हमारे भोजन पचने की प्रक्रिया बंद हो जाती है अतः ऐसी स्थिति में पाचन शक्ति बढ़ाने के उपायों की आवश्यकता होगी।

**पाचक गोली दीजिये, बढ़ जायेगी भूख।
धरती पर जल धार भी, जाये जल्दी सूख॥**

जिस प्रकार मानव शरीर में पाचन शक्ति बढ़ाने के लिये पाचक गोली जैसे हाजमोला आदि की गोलियां दी जाती हैं उसी प्रकार की पाचक गोली यदि जमीन को भी दी जाये तो उस स्थान की जल के लिये भूख बढ़ जायेगी और उस पर से बहने वाले जल की धार भी जल्द

सूख जायेगी अर्थात् वह जल जमीन में शीघ्रता से रिसने लगेगा। जमीन के संदर्भ में पाचक गोली का तात्पर्य सोखता गड्ढों से है।

**जहां-जहां जल देखिये, बहता हो बेकार।
खोदें गड्ढा पुरूष भर, दें उचित आकार ॥**

अतः जहां जहां जिस स्थान पर व्यर्थ जल बहता हो और जमीन के अंदर न जा पाने के कारण कीचड़ मच रहा हो ऐसे स्थानों पर पाचक गोली अर्थात् सोखता गड्ढे बनाना चाहिये। इन्हें बनाने के लिये लगभग एक पुरूष अथवा 5 से 6 फुट गहरा गड्ढा खोदें। गड्ढे का आकार यानी लंबाई चौड़ाई जल की आवक पर निर्भर होती है।

**पहले भर दें, बोलडर, फिर गिट्टी फिर रेत।
जल धारा को मोड़कर, ता में दें समेट ॥**

इस गड्ढे में नीचे लगभग एक तिहाई भाग में बड़े बोलडर फिर उसके ऊपर एक तिहाई भाग में गिट्टी तथा ऊपरी एक तिहाई भाग में रेत भर दें। और बहने वाले जल के मार्ग को मोड़कर गड्ढे में मिला दें। यदि आवागमन का स्थान है तो ही इसे पूरा भरें, अन्यथा इसका ऊपरी भाग कुछ खाली रखा जा सकता है, जिससे उस स्थान पर जल ठहर सके।

**घर की मोरी के निकट, हैंडपम्प के पास।
छत जल को भी सोखने, कीजै यही प्रयास ॥**

इस प्रकार के सोखता गड्ढों का निर्माण घरों की नाली के पास, हैंड पंप से मचने वाली कीचड़ के स्थान पर तथा मकानों की छत से वह जाने वाले पानी के लिये भी किया जा सकता है। सामान्यतः एक दो मकानों या एक हैंड पंप के जल के लिये दो हाथ लंबा और दो हाथ चौड़ा गड्ढा पर्याप्त होता है।

**पाचक गोली इस तरह, देंगी दोहरा लाभ।
जल तो सोखेंगी बहुत, गांव रखेंगी साफ ॥**

इस प्रकार से ये पाचक गोलियां अर्थात् सोखता गड्ढे किसी भी क्षेत्र में दोहरा लाभ प्रदान करेंगे। पहला तो यह कि व्यर्थ बहने वाले जल को जमीन के अंदर पहुँचायेंगी जिससे आसपास के भू-जल स्तर में सुधार होगा और दूसरा यह कि गांवों में इनके कारण कीचड़ नहीं मच पायेगा और गांव भी साफ सुथरे रहेंगे।

ग्लूकोस बाटल : (अर्थात् छोटे छोटे पोखर)

**पाचक गोली से अणर, बने न पूरा काम।
ग्लूकोस की बाटली, तब आयेगी काम ॥**

जिस प्रकार मानव शरीर के लिये जब पाचक गोलियों से स्वास्थ्य लाभ नहीं हो पाता तब डाक्टर ग्लूकोस के बाटल का प्रयोग करते हैं ठीक इसी प्रकार जब जल की समस्या का निदान इस प्रकार के सोखता गड्ढों से नहीं हो पाता तब ग्लूकोस की बाटल यानी छोटे डबरा डबरी या फार्म पौंड आदि का निर्माण आवश्यक होता है।

**वर्षा जल से खेत में, जहां बहे जल धार।
कुंडी इक खुदवाइये, दें उचित आकार ॥**

जैसे ग्लूकोस की बाटल को लगाने के लिये डाक्टर शरीर में नस दूढ़ते हैं इसी प्रकार खेतों में डबरा डबरी बनाने के लिये भी खेतों में नस दूढ़ें। खेतों की नस वही है, जहां से वर्षा का जल बहकर जाता है जल के इसी मार्ग पर एक बड़ा गड्ढा खोद कर डबरा डबरी अथवा फार्म पौंड का निर्माण करें।

**लंबा चौड़ा कीजिये, देख खेत की ओर।
गहराई हो दो पुरुष, रहे रिसन पुर जोर ॥**

इस पोखर का आकार यानी लंबाई और चौड़ाई खेतों के आकार पर निर्भर होती है किंतु इसकी गहराई कम से कम दो पुरुष यानी लगभग 10 फीट हो तो बहुत अच्छा होता है यदि कोपरा या मुश्म का लेबल और जल्दी मिल जाये तो इसे इस लेबल तक भी लिया जा सकता है।

**आवक जावक की तरफ, दीजै पत्थर डाल।
संग लगावें घास कुछ, छन्नी जैसा जाल ॥**

इस प्रकार के पोखरों में जिस ओर से जल आता है वहां पर और जिस ओर से जल निकलने की व्यवस्था रखी जाती है वहां पर यानी दोनों ओर खुले पत्थरों का बंधान बना कर कुछ घास आदि भी लगा देनी चाहिये। इस प्रकार की घास और पत्थरों के बंधान वर्षा जल के लिय छन्नी का कार्य करेंगे।

**वर्षा जल या कुण्ड में, छन-छन के भर जाय।
सींच, सपर जो भी बचे, बूढ़-बूढ़ रिस जाय ॥**

इस प्रकार की व्यवस्था बनाने से इस पोखर में वर्षा का जल छन-छन कर भर जायेगा। इस जल का उपयोग सिंचाई एवं निस्तार में भी किया जा सकता है और जो जल इससे बच जायेगा वह धीरे धीरे जमीन में रिस जायेगा और भू जल भंडार को बढ़ायेगा।

इंजेक्शन : (अर्थात् पंप प्रयोग)

**जब बढ जाये दर्द अरु, निर्बल होय शरीर।
सुई एक लगवाइये, घट जायेगी पीर ॥**

जब शरीर अधिक अस्वस्थ होता है और दर्द निरंतर बढ़ता रहता है तब ग्लूकोस की बाटल के साथ साथ इंजेक्शन का भी प्रयोग आवश्यक होता है धरती के संदर्भ में इसका तात्पर्य है कि जब पोखरों के माध्यम से जल भंडार की पूर्ति संभव न हो तब पंप प्रयोग के माध्यम से भी भू जल को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिये।

**दवा सुई के मार्ग से, जैसे जाय शरीर।
वैसे ही इस भूमि में, भर दीजै कुछ नीर ॥**

जिस प्रकार इंजेक्शन में दवा को एक छोटे पंप और सुई की सहायता से शरीर में प्रवेश कराया जाता है ठीक उसी प्रकार से वर्षा जल को भी बड़े पंपों के प्रयोग से जमीन के अंदर प्रवेश करायें। इस जल को धरती में प्रवेश कराने के लिये नलकूप एक अच्छे माध्यम का कार्य करते हैं।

**कूप, नदी या बावड़ी, या कोई तालाब।
भर जायें जो जल्द ही, इक दो वर्षा बाढ़ ॥**

इस विधि के लिये उन कुओं अथवा बावड़ियों के जल का प्रयोग करें जो सामान्यतः एक या दो वर्षा के पश्चात पूरे भर जाते हैं और यदि इनका जल निकाल भी लिया जाये तो आगामी समय में होने वाली वर्षा से पुनः भर जाने की पूरी पूरी संभावना रहती है।

**इनके जल को पम्प से, नलकूपों में डार।
भू-जल को बढ़वाइये, कभी न टूटे धार ॥**

इस जल को प्रवेश कराने के लिये नलकूपों में पतले लोहे के पाइप को नलकूपों में उतारे और चयनित जल स्रोत के जल को पंप के माध्यम इसमें उतारें। ऐसा प्रयास करने से भी भू-जल का भंडार बढ़ जाता है क्योंकि जो जल अधिक वर्षा के समय व्यर्थ बह जाता वह भू जल भंडार में यानी जमीन के नीचे सुरक्षित हो जायेगा। यदि इस विधि से 30 से 40 मिनट तक जल प्रवेश न हो सके तो इसे बंद कर देना चाहिये। क्योंकि हो सकता है कि नलकूप बड़े भू जल भंडार से संबद्ध न हो।

मुख्य भोजन : (कूप रिचार्ज)

**जब मरीज हो जाये, अति खाने से लाचार।
मुख्य में भोजन दीजिये, सीधे ही सरकार ॥**

अस्वस्थता के बढ़ते क्रम में जब मरीज भोजन नहीं कर पाता तब कभी उसे सीधे चम्मच से मुंह में भोजन या जल पिलाना पड़ता है ठीक उसी प्रकार पृथ्वी पर जब जल का संकट अधिक गहरा गया हो तब इस धरती मां को भी सीधे मुख्य में जल की आपूर्ति करना चाहिये।

**धरती मां के मुख्य सभ्री, खेत गांव के कूप।
वर्षा जल को मोड़कर, इनमें भरिये खूब ॥**

हमारे खेतों एवं गांवों में जितने भी कुये हैं वे सभी धरती मां के मुख्य ही हैं। इनमें वर्षा के जल को भरने का प्रयास करना चाहिये ऐसा करने से कुये अधिक रिचार्ज हो जायेंगे और भू जल के भंडार को भी अधिक बढ़ाया जा सकता है।

**छन्नी एक बनाइये, जल मारण के बीच।
बालू, गिट्टी, बोल्टर, फिर पाइप से खींच ॥**

खेतों से बहने वाले वर्षा जल को कुये की ओर मोड़ना चाहिये और इस जल को कुये में गिराने के पूर्व एक छन्नी का निर्माण करना चाहिये छन्नी बनाने के लिये जल ले जाने वाली नाली में क्रमशः रेत, गिट्टी एवं बोल्टर का प्रयोग करना चाहिये और फिर एक पाइप लगाकर इस जल को कुये में उतार देना चाहिये।

**कूप भरेंगे जल्द सब, बरसा में कई बार।
रिस-रिस खूब बढ़ायेंगे, भू-जल का भण्डार ॥**

इस प्रकार का उपचार करने से कुये, बरसात में कई बार भरेंगे और जब भरा हुआ जल जमीन के अंदर रिसेगा तब भू जल का भंडार निश्चित रूप से बढ़ेगा और जो कुये बरसात के चंद माह बाद ही सूख जाते थे वे अधिक समय तक जीवित रहेंगे।

नासिका आपूर्ति : (अर्थात् नलकूप रिचार्ज)

**मुख भोजन से भी अगर, बंधें न पूरी धीर ।
डाल नली इक नाक में, जीवत करें शरीर ॥**

जब मरीज को सीधे मुख में जल पिलाने से भी आराम नहीं हो पाता तब नाक से आक्सीजन अथवा भोजन दिया जाता है ठीक उसी प्रकार जब कुओं के रिचार्ज से भी जल की समस्या का निदान न हो तो नलकूपों के रिचार्ज का कार्य किया जाना चाहिये ।

**नलकूपों से लीजिये, आप नली का काम ।
भू-जल की गहराई में, इनका खूब मुकाम ॥**

नलकूपों से ठीक वैसा ही काम लिया जा सकता है जिस प्रकार आक्सीजन देने के लिये नली का प्रयोग किया जाता है क्योंकि ये नलकूप भूजल भंडार से अच्छी तरह जुड़े होते हैं । और इनके माध्यम से सतही जल को आसानी से भू जल भंडार में उतारा जा सकता है ।

**गड्ढा इक खुदाइये, कौंसिंग के चहुं ओर ।
कौंसिंग में चहुं छेद कर, बांधें नरियल डोर ॥**

जिन नलकूपों को रिचार्ज करना हो अर्थात् जिनके माध्यम से जल को नीचे उतारना हो, उनके चारों ओर लगभग 3 फुट की दूरी तक अर्थात् 6 फुट व्यास का और 10 फुट गहरा गड्ढा खोदें । इस खुदाई में नलकूप की कौंसिंग का जो भाग निकल आयेगा उसमें चारों ओर छोटे-छोटे छेद करके उसके ऊपर नारियल की रस्सी बांधें यह रस्सी जल को छानने का कार्य करेगी ।

**पहले भरिये बोल्टर, फिर गिट्टी फिर रेत ।
जल धारा को मोड़कर, दीजै उसे समेट ॥**

फिर इस गड्ढे में नीचे लगभग एक तिहाई भाग में बोल्टर भरें, उसके ऊपर एक तिहाई भाग में मोटी गिट्टी और उसके ऊपर बारीक रेत भरें इसके ऊपर लगभग 8 से 10 इंच की गहराई खाली छोड़ दें जिसमें जल आकर रुक सके । फिर आसपास से बहने वाले जल की धारा को इस गड्ढे की ओर मोड़ दें ।

**बरसा जल को मोड़कर, नलकूपों की ओर ।
छान-छान भर दीजिये, भू-जल हो पुर जोर ॥**

इस प्रकार की व्यवस्था बना देने से और वर्षा के बहते हुये जल की दिशा को नलकूपों की ओर मोड़ देने से संपूर्ण वर्षा काल में जल छन छन कर जमीन के अंदर भरता जाता है, और भू जल में वृद्धि होती है ।

**छत जल को भी रोककर, कर छन्नी से पार ।
कूप और नलकूप में, दें जतन से डार ॥**

ठीक इसी विधि से मकानों की छतों के जल को भी छानकर कुओं और नलकूपों में भरा जा सकता है । इसके लिये छतों के जल का निकास एक स्थान से बनाकर वहां एक फिल्टर की व्यवस्था बनानी चाहिये । जब इस फिल्टर के माध्यम से वर्षा का एकत्रित जल गुजरेगा तब वह छन जायेगा और छनने के बाद इस जल को नलकूपों में उतार दिया जाना चाहिये ।

**बरसा जल जो व्यर्थ ही, बह जाता बेकार।
जमीं तले, पा जायेगा, भू-जल का भंडार ॥**

इस प्रकार वर्षा का जो जल व्यर्थ ही बह जाता वह जमीन के नीचे भू जल भंडार में मिल जाता है और उसे बढ़ाता है जिससे जल की समस्या का निदान होता है। इस भू जल का दोहन आवश्यकतानुसार किया जा सकता है।

आपरेशन : (भूमि संरक्षण कार्य)

**हर प्रयास के बाद भी, अगर रहें लाचार।
चीर-फाड़ से कीजिये, तब उसका उपचार ॥**

जब उपरोक्त सभी उपायों के बाद भी मरीज स्वस्थ नहीं हो पाता तब डाक्टर उसे आपरेशन कराने की सलाह देते हैं। आपरेशन करने का मूल सिद्धांत होता है कि किसी एक स्थान से आवश्यक अंग को काटकर दूसरे वांछित स्थान पर लगाया दिया जाये ताकि वहां पर वांछित उद्देश्य की पूर्ति हो सके।

**भूमि हो ढालू बहुत, रुके नहीं जल धार।
नाली कुछ बनवाइये, या डालें कुछ पार ॥**

जिस जमीन पर ढालू अधिक होता है और जहां बहता हुआ जल अधिक समय नहीं रुक पाता, वहां पर नाली या बंधान के रूप में कुछ व्यवधान बनाये जाये ताकि बहता हुआ जल कुछ अधिक समय तक रुक सके।

**जल नाली में बैठकर, लेगा कुछ विश्राम।
प्यास बुझाकर भूमि की, देगा कुछ आराम ॥**

अकृषि भूमि में, खेतों के चारों ओर, पहाड़ी क्षेत्रों के ऊपर इत्यादि स्थानों पर नालियां बना देने से इन नालियों में जल अधिक समय तक रुकता है और यह जल अधिक समय तक जमीन में प्रवेश होते रहने से जल की समस्या का निदान कुछ हद तक हो जाता है।

**बंधानों की रोक से, ठहरेगी जल धार।
सोख अधिक जल भूमि भी, कर लेगी उच्छार ॥**

इसी प्रकार कृषि भूमि में, खेतों के चारों ओर, पहाड़ी क्षेत्रों के ऊपर बंधानों के निर्माण से बहने वाला जल रुक रुक कर चलता है और अधिक समय तक रुकने के कारण जमीन में अधिक देर तक प्रवेश होता रहता है जिससे भूमि भी तृप्त होती है और जल की समस्या का भी निदान होता है।

**गर नाली, बंधान से, मिटै न भू की प्यास।
बना वेदिका कीजिये, जल पावन की आस ॥**

नाली और बंधानों के अतिरिक्त वेदिकाओं के निर्माण से भी जल भंडार बढ़ाने का प्रयास किया जा सकता है इसे सामान्यतः अधिक ढालू क्षेत्रों में किया जाना अधिक उपयोगी होता है। इसके लिये ढालूदार क्षेत्र में ऊपरी भाग की मिट्टी को काटकर निचले भाग में डाला जाता है। इस प्रकार ढालूदार क्षेत्र सीढ़ी दार खेतों में परिवर्तित हो जाता है।

**ढालों की लंबाई को, दें सीढ़ी का रूप।
बहता जल रुक रुक चले, मिटे धरा की भूख ॥**

इस प्रकार अधिक ढालदार खेतों को सीढ़ीदार खेतों में बदल देने से उनका ढाल कम हो जाता है और बहने वाले जल को रुक-रुक कर चलना पड़ता है। जिससे जल का प्रवेश अधिक समय तक जमीन में होता रहता है और धरती की भूख मिटती रहती है अर्थात् जल का भंडारण होता रहता है।

**ज्यों अस्वस्थ मां के लिये, नहीं दूटती आस।
उसी भांति इस भूमि पर, कीजै सकल प्रयास ॥**

जिस प्रकार हम अपनी अस्वस्थ मां के उपचार के लिये सारे संभव प्रयासों को करते रहते हैं और अंतिम समय तक आशा नहीं छोड़ते ठीक उसी प्रकार इस पृथ्वी पर आये जल संकट से निपटने के लिये सारे प्रयास करना भी हमारा धर्म है। प्रत्येक प्राणी को इस पुनीत कार्य को अवश्य करना चाहिये।

**मेहनत से बढ़ जायेगा, भू-जल का भंडार।
मानो नेक सलाह यह, कहे 'अवधेश कुमार' ॥**

इस प्रकार भू जल भंडार को बढ़ाने के लिये बस थोड़ी सी मेहनत और सूझ-बूझ की आवश्यकता है। साथ ही इस कार्य से जुड़े हुये लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ने की आवश्यकता है ताकि वे प्रेरित होकर इस कार्य को अपना परम लक्ष्य माने। सीधे शब्दों में यदि कहा जाये तो धरती को माता कहने भर की ही नहीं बल्कि इसे माता मानने की परम आवश्यकता है।

॥ इति भू जल संग्रह दोहावली ॥

रचयिता

अवधेश कुमार नेमा,
एम टैक (भूमि एवं जल संरक्षण), उप संचालक कृषि
संचालनालय किसान कल्याण तथा कृषि विकास, मध्यप्रदेश
विगत 24 वर्षों से भूमि एवं जल संरक्षण के कार्यों से संबद्ध
4 वैशाली, सुरेन्द्र प्लेस, भोपाल
nemaak@rediffmail.com, 9826293761

